INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

शिक्षक और माध्यमिक शिक्षाः उद्देश्य, भूमिका और प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

[1]आशा कुमारी, [2]डॉ धर्मेन्द्र सिंह (प्रोफेसर)
[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक
[1–2]विभागः ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल विश्वविघालय, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, यू.पी.

सार
माध्यमिक शिक्षा किसी भी देश के शैक्षिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच एक सेतु का कार्य करती है। इस अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षकों की भूमिकाओं और उनकी प्रभावशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। मुदालियर आयोग (1952–53) और कोठारी आयोग (1964–66) की सिफारिशों के आधार पर, लोकतांत्रिक नागरिकता, व्यावसायिक दक्षता, नेतृत्व विकास, और व्यक्तित्व निर्माण जैसे उद्देश्यों को माध्यमिक शिक्षा के मुख्य लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शिक्षक की भूमिका को विभिन्न आयामों, जैसे आत्मविश्वासी, लोकतांत्रिक, प्रेरक, नैतिकतावादी और सहायक के रूप में परिभाषित किया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक की प्रभावशीलता को उनकी विषयवस्तु की समझ, संचार कौशल, कक्षा प्रबंधन और विद्यार्थियों के समग्र विकास में उनके योगदान के आधार पर मापा गया है। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि माध्यमिक शिक्षा की सफलता और छात्रों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए, शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, उचित प्रशिक्षण और समर्थन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि वे शिक्षा की गुणवत्ता और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकें।

मुख्य शब्दः
माध्यमिक शिक्षा, शिक्षक की भूमिका, मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग, लोकतांत्रिक नागरिकता, शिक्षक प्रभावशीलता, व्यावसायिक दक्षता, शिक्षा का उद्देश्य, व्यक्तित्व विकास, नैतिक मूल्य।

भूमिका
माध्यमिक विद्यालय शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की खाई को पाटती है। हाई स्कूल में छात्र जो सीखते हैं, वह उनके भविष्य के अवसरों को गहराई से प्रभावित करता है। माध्यमिक विद्यालय का अनुभव न केवल जीवन भर सीखने की नींव रखता है, बल्कि उच्च शिक्षा में सफलता के लिए मार्ग भी तैयार करता है।

इसके अतिरिक्त, माध्यमिक विद्यालय के वर्ष छात्रों को विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला में ज्ञान और हस्तांतरणीय कौशल प्रदान करते हैं। यह उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में मददगार होता है। यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्रों को, चाहे उनका लिंग या सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, उच्च–गुणवत्ता वाली माध्यमिक शिक्षा तक समान पहुँच मिले, आज की प्रमुख चुनौतियों में से एक है। एक समाज के रूप में, नई समस्याओं और अवसरों का सामना करने के लिए, यह अनिवार्य हो गया है कि माध्यमिक शिक्षा का दायरा व्यापक हो और सभी के लिए उपलब्ध हो।

माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य

ए) माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग), 1952–53
माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग) ने 1952–53 में माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों के संबंध में निम्नलिखित सिफारिशें की थीं।

लोकतांत्रिक नागरिकता का विकासः भारत एक लोकतांत्रिक देश है। इसलिए माध्यमिक शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक नागरिकता के गुणों का विकास करना है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में अच्छी नागरिकता एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी है जिसके लिए सभी नागरिकों को सावधानीपूर्वक प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। लोकतांत्रिक नागरिकता के विकास के पक्ष में, विद्यार्थियों में बहुत सारे बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक गुणों का निर्माण किया जाना वांछनीय है। केवल शिक्षा के माध्यम से ही ऐसे गुणों

को मजबूत किया जा सकता है। आयोग ने सिफारिश की कि शिक्षा का उद्देश्य देश में स्वशासित या लोकतांत्रिक नागरिकों को विकसित करने के लिए निम्नलिखित गुणों का विकास करना होना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, आज्ञाकारिता, सहयोग, सामाजिक संवेदनशीलता, उदारता और सहिष्णुता के गुण विकसित किए जाने चाहिए। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक समस्याओं को समझने और निरक्षरता, असमानता, बाल श्रम, जातिवाद, अस्पृश्यता, शोषण आदि जैसी सभी सामाजिक बुराइयों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने की शिक्षा दी जानी चाहिए।

व्यावसायिक दक्षता में सुधारः

माध्यमिक शिक्षा को युवा शिक्षार्थियों की व्यावसायिक या उत्पादक दक्षता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

नेतृत्व के लिए शिक्षाः

माध्यमिक शिक्षा अधिकांश शिक्षार्थियों के लिए एक चरम बिन्दु है। परिणामस्वरूप, स्कूली शिक्षा के अंतिम चरण में, प्रत्येक शिक्षार्थी को स्वतंत्र रूप से विभिन्न व्यवसायों में जाने में सक्षम होना चाहिए। हमें उचित नेतृत्व प्रदान करने में शिक्षा की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता।

व्यक्तित्व का विकासः

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को विद्यार्थियों में सृजनात्मक ऊर्जा की शक्तियों को प्रवाहित करना चाहिए, ताकि वे अपनी सांस्कृतिक विरासत की सराहना करने में सक्षम हो सकें और रचनात्मक तथा मूल्यवान रुचि अर्जित कर सकें, ताकि वे अपने अवकाश के दौरान समृद्ध रुचियों का विकास कर सकें तथा अपनी विरासत के विकास में योगदान दे सकें।

बी) भारतीय शिक्षा आयोग (कोठारी शिक्षा आयोग), 1964–66

भारतीय शिक्षा आयोग (कोठारी शिक्षा आयोग) 1964–66 और माध्यमिक शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्य।

- विज्ञान शिक्षा को स्कूली शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए क्योंकि समकालीन समाज में विकास विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित है।
- कार्य अनुभव को सामान्य या व्यावसायिक शिक्षा के अनिवार्य भाग के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
- शिक्षा का व्यवसायीकरण अंतिम उत्पाद में लाया जाना चाहिए।
- विज्ञान के अनुप्रयोग का उपयोग उत्पादकता में सुधार के लिए किया जाना चाहिए।

कोठारी आयोग ने पाया कि देश जिस समाजवादी सभ्यता का निर्माण करना चाहता है, उसमें व्यक्तिगत और समूह हितों के प्रति स्व–केंद्रित और संकीर्ण निष्ठाओं को देशव्यापी विकास के प्रति व्यापक निष्ठाओं के स्थान पर रखना होगा। इसलिए वह निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करता हैः

- एक सामान्य स्कूल प्रणाली
- सामाजिक एवं राष्ट्रीय सेवा
- उचित भाषा नीति
- राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देना

आयोग ने यह भी पाया कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास के कारण भारत आधुनिकीकरण की राह पर है। शिक्षा को आधुनिकीकरण के विकास को गति देने में सहायता करनी चाहिए। परिणामस्वरूप शैक्षिक पुनर्निर्माण में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिएः

- ज्ञान विस्फोट के साथ तालमेल बनाए रखना
- बदलाव की चाहत
- सामाजिक व्यवस्था पर पुनर्विचार

आयोग ने सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर जोर दिया। आयोग ने जोर दिया कि इन मूल्यों को

शिक्षा के माध्यम से बेहतर तरीके से विकसित किया जाना चाहिए।

- सभी सरकारी और निजी संस्थानों में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा शुरू की जानी चाहिए।
- मूल्य शिक्षा को समय–सारिणी में अलग से रखा जाना चाहिए।
- धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।
- देश के सभी भागों में विषयों का एक समान पाठ्यक्रम व्यवस्थित किया जाना चाहिए।

कोठारी आयोग का अभिप्राय था कि यह सदैव ध्यान में रखा जाना चाहिए कि समाज और राष्ट्र की आवश्यकताएं तेजी से बदल रही हैं और शिक्षा को इन परिवर्तनों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए सदैव सजग रहना चाहिए।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षा प्रणाली के प्रत्येक बिंदु पर शिक्षक के महत्व को पहचाना जाता है। कोठारी आयोग, जो 1964 से 1966 तक भारत में शिक्षा का प्रभारी था, ने शिक्षकों और उनके काम को बहुत महत्व दिया। कोठारी आयोग की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। कोठारी आयोग ने कहा, ''शिक्षकों की गुणवत्ता, क्षमता और चरित्र निस्संदेह उन सभी कारकों में सबसे महत्वपूर्ण हैं जो शिक्षा की गुणवत्ता और देशव्यापी विकास में इसके योगदान को प्रभावित करते हैं।'' पर्याप्त संख्या में योग्य शिक्षकों की भर्ती करना, यह सुनिश्चित करना कि उनके पास उत्कृष्ट व्यावसायिक विकास के अवसर हों, और अनुकूल कार्य वातावरण स्थापित करना जहाँ वे सफल हो सकें, अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षक की विविध भूमिकाएँ

रमण टीवी (2003) ने अपने डॉक्टरेट थीसिस में शिक्षक की बहुमुखी भूमिकाएं प्रस्तुत कीं।

- **आत्मविश्वासी:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सफल हो और विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाने में योगदान दे।
- **डेमोक्रेट:** एक शिक्षक से लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने की अपेक्षा की जाती है।
- **जासूस:** शिक्षक ने शासन करने वाले टूटे हुए छात्रों का पता लगाया।
- **सीखने का सुगमकर्ता:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थी में प्रभावी शिक्षण को बढ़ावा दे। शिक्षक एक मित्र, मार्गदर्शक और दार्शनिक के रूप में कार्य करता है।
- **समूह के नेता:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह एक सामुदायिक समूह के रूप में कक्षा में एकता या सामंजस्य तथा उपयुक्त वातावरण विकसित करने में एक नेता के रूप में कार्य करेगा।
- **सहायक:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों का सहयोगी बने तथा उन्हें शैक्षिक और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करे।
- **प्रेरक एवं आदर्श:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसा कार्य करे जिससे छात्र उससे प्रेरणा लें।
- **न्यायाधीश:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों की उपलब्धियों का निष्पक्ष एवं विवेकपूर्ण तरीके से मूल्यांकन करे।
- **चिंता को सीमित करने वाला या कम करने वाला:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह कक्षा में ऐसे हालात पैदा करे कि विद्यार्थियों को कम से कम चिंता हो और वे भावनात्मक रूप से स्थिर महसूस करें।
- **मिशनरी:** एक शिक्षक से बिना किसी ठोस इनाम के सेवा की अपेक्षा की जाती है।
- **नैतिकतावादी:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सभ्यता द्वारा पोषित सही दृष्टिकोण, नैतिकता और नैतिक मूल्यों को विकसित करे।

- **माता–पिता–सरोगेट (माता–पिता–विकल्प):** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह छात्रों के अभिभावक के रूप में कुछ करे और छात्रों के साथ प्रेम और स्नेह से पेश आए।
- **तर्कवादी:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह तर्क पर आधारित कार्यों को प्रोत्साहित करे।
- **रेफरी:** एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों के बीच विवादों को निष्पक्ष तरीके से सुलझाएगा।

शिक्षक प्रभावशीलता

कक्षा में विशेष रूप से, शिक्षक छात्र के जीवन में एक शक्तिशाली व्यक्ति होता है। छात्र पर सबसे अधिक स्थायी प्रभाव शिक्षक के चरित्र का होता है। गुरुमूर्ति (2005) ने कहा, "शिक्षकों का निजी जीवन सार्वजनिक चिंता का विषय है।" आदर्श शिक्षक वह होता है जो ईमानदारी के उच्चतम मानकों का उदाहरण प्रस्तुत करता है। शिक्षक की यह जिम्मेदारी है कि वह छात्र को उन सीखने के अवसरों को चुने और बताए जो उसकी जरूरतों को पूरा करने में मदद करेंगे और साथ ही उसके नागरिक कर्तव्य को भी पूरा करेंगे।

एक आदर्श शिक्षक को अपने शिष्यों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक संदर्भों पर भी ध्यान देना चाहिए। प्राचीन काल के भारतीय गुरुओं को सर्वोच्च सम्मान देते थे, उन्हें ऊपर से प्रकाश की किरण मानते थे। उनके द्वारा ज्ञान, बुद्धि और विवेक की अग्नि प्रज्वलित की गई, और बाकी सभी ने भी उनका अनुसरण किया। यहां तक कि प्राचीन भारतीय ऋषियों ने भी शास्त्रों में लिखे सत्य को महसूस किया। वास्तव में, उन्होंने अपनी भावनाओं और आत्माओं को भौतिक रूप में मूर्त रूप दिया।

एक शिक्षक शिक्षा की प्रक्रिया के माध्यम से अपने विद्यार्थी को सीखने, विचार और परिचय के मामले में निरंतर विकसित करने में लगा रहता है। इसलिए एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों के सफल जीवन को आकार देने में खुद को भाग्यशाली मानता है। नतीजतन, केवल ज्ञानवान या विद्वान विकास के बजाय शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास को पूरा करना शिक्षक का मिशन है। यह देखा गया है कि वर्तमान शिक्षा ने एक विद्यार्थी को अच्छी तरह से शिक्षित तो बनाया है, लेकिन जरूरी नहीं कि वह सुसंस्कृत हो, इस विसंगति को ठीक करने के लिए यह अपरिहार्य है कि एक शिक्षक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से एक छात्र के भावनात्मक विकास के लिए जागरूकता प्रदान करे।

शिक्षक का विषय ज्ञान, संचार की उसकी कुशलता और निर्बाध सीखने की उसकी क्षमता एक शिक्षक के रूप में उसकी गुणवत्ता, प्रभावशीलता और उत्कृष्टता को निर्धारित करती है। शिक्षकों के सहयोग और जोरदार भागीदारी के बिना कोई भी सुधार कुछ हासिल नहीं कर सकता। शिक्षकों की सामाजिक, भौतिक और सांस्कृतिक स्थिति को प्राथमिकता के रूप में माना जाना चाहिए। जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में बताया गया है, सभ्यता की सामाजिक–सांस्कृतिक नैतिकता शिक्षकों की स्थिति पर निर्भर करती है। समुदाय और सरकार की जिम्मेदारी है कि वे ऐसा माहौल विकसित करें जो शिक्षकों को रचनात्मक और सृजनात्मक बनने के लिए प्रोत्साहित कर सके। शिक्षक को समाज की जरूरतों और क्षमताओं के आधार पर शिक्षण के नवीन तरीकों और सहायक साधनों का आविष्कार करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

शिक्षकों के काम के लिए सहमत सामाजिक रूप से मूल्यवान लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता, विशेष रूप से, लेकिन केवल छात्रों के सीखने को सुविधाजनक बनाने पर केंद्रित काम तक सीमित नहीं, कैम्पबेल एट अल. (2004) द्वारा शिक्षक प्रभावशीलता के रूप में परिभाषित की गई थी। जब हम शिक्षक की प्रभावशीलता के बारे में बात करते हैं तो हमारा मतलब यह होता है कि वह शिक्षक होने के साथ आने वाले संस्थागत और अन्य कर्तव्यों को कितनी अच्छी तरह पूरा करता है। शिक्षा के कुशल तरीके, छात्र और कक्षा प्रबंधन, शिक्षक–छात्र संबंध, मूल्यांकन उपकरण और प्रतिक्रिया सभी शिक्षक की प्रभावशीलता में योगदान करते हैं। शिक्षकों के पास छात्रों के सीखने को प्रभावित करने वाले कई सबसे महत्वपूर्ण कारकों पर सीमित नियंत्रण होता है, जिसमें छात्रों की योग्यता, दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम की सामग्री का पिछला ज्ञान, सीखने के कौशल और छात्रों द्वारा अपने सीखने में लगाया जाने वाला समय, अध्ययन करने की उनकी भावनात्मक इच्छा, आदि शामिल हैं। चूँकि शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच स्पष्ट रूप से सांझा जिम्मेदारी होती है कि वह शिक्षार्थी

क्या सीखता है, और इस कारण से कि कई शिक्षार्थी शिक्षक के बावजूद सीखने में सक्षम होते हैं, जबकि अन्य एक कुशल व्यवसायी के सभी बेहतरीन प्रयासों के बावजूद असफल होते हैं, ''शिक्षक प्रभावशीलता'' की व्याख्या, जैसा कि डेरेक सी. बोक ने कहा, शिक्षार्थियों और शिक्षकों की ओर से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए ''विश्वास का कार्य'' प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में न केवल अकादमिक उत्कृष्टता लाना है, बल्कि उनमें नैतिक, सामाजिक, और लोकतांत्रिक मूल्यों का भी विकास करना है। शिक्षक इस प्रणाली के केंद्र में हैं, और उनकी भूमिका केवल शिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि वे छात्रों के मार्गदर्शक, प्रेरक और मित्र के रूप में कार्य करते हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसके लिए शिक्षकों को बेहतर प्रशिक्षण, उचित संसाधन, और अनुकूल कार्य वातावरण प्रदान करना आवश्यक है। शिक्षक और माध्यमिक शिक्षा का यह समन्वय ही एक सशक्त, समावेशी और प्रगतिशील समाज की नींव रखता है।

संदर्भ

- आदिलोगुल्लारी, इल्हान (2014) "चौथा सर्वेक्षण अनुसंधान शिक्षा प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली में एम.डी.
- बरनी, डी., डैनियोनी, एफ. और बेनेवेन, पी., 2019. शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिताः शिक्षण के लिए व्यक्तिगत मूल्यों और प्रेरणाओं की भूमिका। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 10, पृ.1645.
- चामुंडेश्वरी और वसंती (2019) ने छात्रों के बीच आत्म–अवधारणा के कुछ सहसंबंधों का अध्ययन नोवोदया विद्यालय में किया है। भारतीय शिक्षा सार खंड (1) संख्या 1 जनवरी 2001।
- कावर्ड और रेनी हिगडन (2019) भावनात्मक बुद्धिमत्ताः यह आईक्यू से ज्यादा क्यों मायने रखती है। यूकेः ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग।
- हुल्वर्शॉर्न, के. और मुलहोलैंड, एस., 2018. सकारात्मक स्कूली माहौल के लिए एक मार्ग के रूप में पुनर्स्थापनात्मक अभ्यास और सामाजिक–भावनात्मक शिक्षा को एकीकृत करना। जर्नल ऑफ रिसर्च इन इनोवेटिव टीचिंग एंड लर्निंग।
- इस्माइल, एन., और इदरीस, के.एन. (2019)। इंटरनेशनल इस्लामिक यूनिवर्सिटी मलेशिया (आईआईयूएम) में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर कक्षा संचार का प्रभाव। यूनिटार ई–जर्नल, 5(1), 37.